मधुवन ओम् शान्ति अंक 255 अक्टूबर 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-09-13)

प्राणप्यारे अव्यक्त-बापदादा के अति लाडले, पुरुषार्थ में हर सेकण्ड नवीनता का अनुभव करने वाले फास्ट पुरुषार्थी, संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी प्यारे बापदादा के इशारों प्रमाण पुरुषार्थ में नवीनता का अनुभव करते हुए, याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा उड़ती कला का अनुभव कर रहे होंगे! समय प्रमाण बापदादा की विशेष प्रेरणा है कि वाचा के साथ-साथ मन्सा सेवा को बढ़ाओ। बुद्धिबल से मन को एकाग्र करके अपनी शुद्ध और पवित्र मन्सा द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करो। पुरुषार्थ भी हमें क्या करना है? बाबा कहते बच्चे, सदा सच्चे होकर रहो, हल्के रहो और मीठा होकर चलो। मन पर कोई भी बोझ न हो। न मैं किसी के लिए बोझ बनूं, न मेरे ऊपर कोई का बोझ हो तब हल्केपन का अनुभव मन्सा सेवा के निमित्त बनायेगा। अभी अच्छा करेंगे तो कल अच्छा ही होगा, ड्रामा में नूंधा हुआ है। कराने वाला बाबा सब काम एक्यूरेक्ट करायेगा। सिर्फ हमें बेफिकर बादशाह की स्थिति में रहना है। अब हर एक की स्थिति ऐसी हो जो बाबा भी प्यार करे और ईश्वरीय परिवार का भी प्यार मिले। न मैं किसी की कम्पलेन करूं, न मेरी कोई कम्पलेन करें। किसी भी प्रकार की समस्या हो उसका समाधान हमारी उपस्थिति से हो जाए। तो ऐसी स्थिति बनाने की भी लगन चाहिए। ऐसे बच्चों पर ही बाबा कुर्बान जाता है।

बोलो, मीठे बाबा से ऐसी अच्छी फीलिंग आती है ना! ऐसे अनुभव होता है कि बाबा मुझसे पर्सनल बात कर रहा है? बाबा ने हम सबको रत्नों से खेलना सिखाया है। बाबा के सामने जाते हैं तो ऐसे लगता जैसे हमारा बाबा ज्ञान सूर्य है, वह मुझे इतनी सकाश दे देकर कितना सुन्दर बना रहा है। बाबा आप कितने वन्डरफुल रत्नागर, जादूगर, सौदागर हो। वतन में बैठकर कितनी कमाल कर रहे हो! अभी जी चाहता है कि बाबा आपका हर एक बच्चा व्यर्थ की बातों से फ्री हो करके, हर समय, हर संकल्प में आप क्या कर रहे हो और क्या करा रहे हो, यह प्रभू लीला देखे। सेवा है ही प्रभु लीला देखने की। अहो प्रभू आपकी लीला! फिर हे भगवन, आप मेरे भाग्य विधाता हो। मैं क्या बताऊं, किन शब्दों में बताऊं... बस जी चाहता है आपके लव में लीन रहूं। बोलो, मेरे मीठे मीठे भाई बहिनें ऐसे ही प्यार में समाते हुए उड़ते उड़ाते रहते हो ना! कोई भी बात हो जाए, अधिक नहीं सोचना। अधिक सोचने से भी बात बड़ी हो जाती है इसलिए मैं कहती डोंट थिंक प्लीज़। जो बातें मेरे काम की नहीं हैं, वह मेरी वृत्ति में अन्दर न जाएं। स्मृति में रहे मैं कौन! मेरा कौन! दिल में और कोई बात नहीं है, दिल साफ है, स्वच्छ है तो जीना अच्छा हो जाता है। भगवान ने जो सच्चाई सिखाई है उससे सब काम सहज हो जाता है। तो ऐसे अनुभव करते सदा आगे बढ़ते चलो।

बाकी मधुबन में तो बेहद की सेवायें सदा चलती रहती हैं। ज्ञान सरोवर, शान्तिवन में अनेक नये नये कार्यक्रम, कान्फ्रेन्सेज़ आदि चल रही हैं। पाण्डव भवन में बहुत अच्छी पावरफुल भट्ठियां हो रही हैं। सब तरफ बाबा की प्रभु लीला देख देख मैं तो सदा हर्षाती रहती हूँ। अभी तो मधुबन में डबल विदेशी बाबा के बच्चों की रिमझिम शुरू हो जायेगी। यह भी बापदादा की कमाल है जो चुम्बक बन सबको अपनी ओर खींचता रहता है।

अभी दादी गुल्जार भी मधुबन में हमारे साथ हैं। सबको विशेष याद दे रही हैं।

अच्छा - सभी को याद

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

सदा प्रसन्नचित्त रहो

1) सदा ब्राह्मण जीवन की मौज में रहो, सदा प्रसन्नचित्त रहो लेकिन मौज में रहने का अर्थ यह नहीं कि जो आया वह किया, मस्त रहा। यह अल्पकाल के मुख की मौज वा अल्पकाल के सम्बन्ध-सम्पर्क की मौज सदाकाल की प्रसन्नचित्त स्थिति से भिन्न है इसलिए अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो, सदाकाल की रूहानी मौज में रहो। यही यथार्थ ब्राह्मण जीवन है।

2) आपके बुद्धि रूपी कम्प्युटर में सदा फुलस्टॉप की मात्रा आये। क्वेश्चन मार्क, आश्चर्य की मात्रा खत्म, इसको कहा जाता है सदा प्रसन्नचित्त। जिसका चित्त प्रसन्न होता है उसके मन-बुद्धि के व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होती, सदा निर्मल, निर्मान। निर्मान होने के कारण सभी को अपने प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया में शीतल हो जायेगा।

3) ब्राह्मण जो सच्चे हैं, ब्राह्मण जीवन में श्रेष्ठ जीवन के लक्ष्य वाले हैं उसकी विशेषता है प्रसन्नता। चाहे कोई गाली भी दे रहे हो तो भी आपके चेहरे पर दु:ख की लहर नहीं आनी चाहिये, प्रसन्नचित्त। गाली देने वाला भी थक जायेगा.., यह नहीं कि उसने एक घण्टा बोला, मैंने सिर्फ एक सेकण्ड बोला। सेकण्ड भी बोला या सोचा, शक्ल पर अप्रसन्नता आई तो फेल हो गये। ऐसे नहीं इतना सहन किया, फिर गुब्बारे से गैस निकल गई। तो गैस वाले गुब्बारे नहीं बनना।

4) प्रसन्नता अगर कम होती है तो उसका कारण प्राप्ति कम और प्राप्ति कम का कारण, कोई न कोई इच्छा है। इच्छा का फाउण्डेशन ईर्ष्या और अप्राप्ति है। बहुत सूक्ष्म इच्छायें अप्राप्ति के तरफ खींच लेती हैं, फिर रॉयल रूप में यही कहते हैं–कि मेरी इच्छा नहीं है, लेकिन हो जाए तो अच्छा है। लेकिन जहाँ अल्पकाल की इच्छा है, वहाँ अच्छा हो नहीं सकता।

5) बापदादा ने देखा है – मैजॉरिटी अपने कमजोर संकल्प पहले ही इमर्ज करते हैं, पता नहीं होगा या नहीं! तो यह अपना ही कमजोर संकल्प प्रसन्नचित्त नहीं लेकिन प्रश्नचित्त बनाता है। होगा, नहीं होगा? क्या होगा? पता नहीं.... यह संकल्प दीवार बन जाती है और सफलता उस दीवार के अन्दर छिप जाती है।

6) सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रहो, प्रसन्नचित्त रहने से बहुत अच्छे अनुभव करेंगे। वैसे भी कोई को प्रसन्नचित्त देखते हो तो कितना अच्छा लगता है! उसके संग में रहना, उसके साथ बात करना, बैठना कितना अच्छा लगता है! और कोई प्रश्नचित्त वाला आ जाए तो तंग हो जायेंगे। अगर प्रसन्नता की पर्सनैलिटी इमर्ज रूप में रहती है तो उनके नयन, उनका चेहरा, चलन, संकल्प और संबंध सब प्रसन्नता वाले होंगे।

7) ब्राह्मण जीवन में दुआयें लेना और देना सीखो। **प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें देना और दुआयें लेना।** कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें – इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शान्त हो।

8) आप बच्चों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्युटर है इसलिए क्या, कैसे के बजाए ब्रह्मा बाप की जीवन के कम्प्युटर से देखो। तो प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त हो जायेंगे। प्रश्नचित्त हलचल बुद्धि है इसलिए प्रश्न का चिन्ह भी टेढ़ा है। प्रसन्नचित्त है बिन्दी। बिन्दी को किसी भी तरफ से देखो तो सीधा ही देखेंगे। और एक जैसा ही देखेंगे। चाहे उल्टा चाहे सुल्टा देखो। प्रसन्नचित्त अर्थात् एकरस स्थिति में एक बाप को फॉलो करने वाले।

9) सन्तुष्टता और विशालता का प्रत्यक्ष स्वरुप हर ब्राह्मण आत्मा के चेहरे पर प्रसन्नता की निशानी दिखाई दे। प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त। चेहरे पर संकल्प और स्वरुप की अविनाशी प्रसन्नता। तो सन्तुष्टता, विशालता और प्रसन्नता यह है 18 अध्याय की समाप्ति।

10) हद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी। प्रसन्नचित्त कभी कोई बात में प्रश्नचित्त नहीं होंगे। प्रश्न हैं तो प्रसन्न नहीं। प्रसन्नचित्त की निशानी - वह सदा नि:स्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा; किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा - न भाग्यविधाता के ऊपर, न ड्रामा पर, न व्यक्ति पर, न प्रकृति के ऊपर, न शरीर के हिसाब-किताब पर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा नि:स्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।

11) ब्राह्मण जीवन का सुख है ही सन्तुष्टता, प्रसन्नता। ब्राह्मण जीवन बनी और उसका सुख नहीं लिया तो नामधारी ब्राह्मण हुए वा प्राप्ति-स्वरूप प्रमाण हुए? तो बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों को यही स्मृति दिला रहे हैं – ब्राह्मण बनें, अहो भाग्य! लेकिन ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनाल्टी 'प्रसन्नता' है।

12) भाग्यवान आत्मायें, हर आत्मा सम्पर्क-सम्बन्ध में आते सदा प्रसन्न रहेंगी। यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित्त के अन्दर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को प्रश्नचित्त कहा जाता है और प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा 'क्यों' की क्यू लगी रहती है।

13) सदा प्रसन्न रहते हो या कभी-कभी रहते हो? कभी अप्रसन्न, कभी प्रसन्न - ऐसे तो नहीं, कभी किसी बात से अप्रसन्न नहीं होते हो? आज यह कर लिया, आज यह हो गया, कल वह हो गया - ऐसे पत्र तो नहीं लिखते हो? सदा प्रसन्नचित्त रहने वाले अपने रुहानी वायब्रेशन से औरों को भी प्रसन्न करते हैं। ऐसे नहीं - मैं तो प्रसन्न रहता ही हूँ लेकिन प्रसन्नता की शक्ति फैलेगी जरुर।

14) सन्तुष्टमणि अर्थात् बेदाग मणि। सन्तुष्टता की निशानी है – सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नॉलेजफुल होने के कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता। व्हाट और व्हाई नहीं, लेकिन डॉट। क्या, क्यों नहीं, फुलस्टॉप, बिन्दु। एक सेकेण्ड में विस्तार, एक सेकेण्ड में सार। ऐसा प्रसन्नचित्त सदा निश्चिन्त रहता है।

15) बेफिक्र बादशाह की विशेषता–वह सदा प्रश्नचित के बजाए प्रसन्नचित्त रहते हैं। हर कर्म में – स्व के सम्बन्ध में वा सर्व के सम्बन्ध में वा प्रकृति के भी सम्बन्ध में किसी भी समय, किसी भी बात में संकल्प-मात्र भी क्वेश्चन मार्क नहीं होगा कि 'यह ऐसा क्यों' वा 'यह क्या हो रहा है', 'ऐसा भी होता है क्या'? प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है।

16) बेफिक्र आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती इसलिए वह सदा प्रसन्न रहती है। प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से – चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी।

शिवबाबा याद है ? 18-2-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"सदा खुशी में रहना है तो संकल्प शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ और दृढ़ हो, ज्ञान अन्दर से टपकता रहे" (दादी जानकी)

सच्ची लगन द्वारा बाबा का बनने से बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त हो गये तो खुशी आ गई। अब जो बाबा कहे वो दिल से करना ही है। बाबा जो कराये, जैसे कराये वैसे करना है। राजयोगी हैं तो मन कर्मेन्द्रियां ऑर्डर में हैं तो सम्बन्ध में होते हुए भी निर्मोही रहते हैं और प्यार से करने से हमेशा के लिये प्रेम स्वरूप बन जाते हैं इसलिए बाबा के लिये हर बात में

सागर कहा जाता है, ऐसे ही पूछें अपने से कि मैं आत्मा भी उन जैसा सब बातों का स्वरूप हूँ? ज्ञान का सागर कहने से बुद्धि में ज्ञान टपकता रहेगा। शान्ति का सागर कहने से शान्ति आती जायेगी, प्रेम का सागर कहने से प्रेम आ जायेगा, आनन्द का सागर कहेंगे तो जीवन में आनन्द आ जायेगा। बाबा सर्वशक्तिवान है, तो शक्तियां आती जायेंगी। तो मैं हूँ ज्ञान स्वरूप, शान्ति स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप, सर्वशक्तिवान की सन्तान शिव शक्ति हूँ। यह मास्टर डिग्री ''मास्टर सर्वशक्तिवान की'' लेनी है हम सबको। ज्ञान सिर्फ मुख से बोले नहीं, स्वरूप में आ जाये, वो चेहरे पर हो। जब ज्ञान सुनने की आदत पड़ती है तो और बातें नहीं सुनते हैं।

व्यर्थ संकल्प शक्ति खर्च करके खत्म करता है, श्रेष्ठ संकल्प शक्ति पैदा करता है। पर श्रेष्ठ संकल्प तब ही होगा जब संकल्प शुद्ध शान्त श्रेष्ठ दृढ़ हो, तो बाबा आ गया, हो गया। कैसे हुआ? अरे, बाबा ने कर लिया ना। इतनी खुशी इतनी शक्ति आ गई संकल्प से। बाबा अभी आप मिले हो, तो मुझे कुछ नहीं चाहिए। घर घर को स्वर्ग बनाना है तो चाहिए चाहिए चाहिए को छोड़ना है। जो मन में है वो मुख पर आता है। जो ईश्वर के सन्मुख आते हैं वो गुरुमुख बन जाते हैं, नहीं तो मनमुख हो जाते हैं माना मन की बातें सोचते हैं। सतगुरू बाबा जो हमको कहता है हम गुरुमुख हैं, मनमुख नहीं है। तो मन से इच्छा ममता को अन्दर ही अन्दर छुट्टी दे दो क्योंकि यह दोनों नुकसानकारक हैं फिर कहेंगे क्या करें? यह आवाज भी असन्तुष्टता का है। जैसे बाबा है ही नहीं। बाबा तो कहता है ये करो, ऐसे करो। और कुछ नहीं तो खाओ पिओ, खुश रहो। हाँ, क्या खाओ? जैसे मधुबन में शुद्ध आहार, अच्छा संग मिलता है, तो जहाँ भी हो अच्छा संग भी हो, शुद्ध आहार भी हो तो राजाई है – यही राजयोग सिखाता है। बाबा के पास जो है वो सब ले करके भरपूर हो जाना है फिर उसको सम्भालना भी है, जीवन में लाऊं, उनसे औरों की जीवन बन रही है। बाबा ने इतना कुछ दिया है जिससे मेरी जीवन तो बहुत सुखी है। और भी मेरे संग में आते साथी बनते हैं वो भी सुखी हैं तो और क्या चाहिए! कुछ नहीं चाहिए, तो बाबा प्यार से गले लगायेगा। फिर फरिश्ता बन उड़ते उड़ाते रहना है।

2) कार्य व्यवहार में रहते ट्रस्टी रहना है तो विदेही रहने का अभ्यास करो

बाबा को हम कितना याद करते हैं या बाबा हमें अपनी याद दिलाता है। हम यहाँ शान्तिवन में बैठे याद करते हैं या बाबा अपनी याद दिला रहा है? यहाँ याद आटोमेटिक आती है, खाते पीते अमृतवेले बाबा की याद आती है और कोई बात याद आती नहीं है। मेरा तो यह हालचाल है, आपका क्या हाल चाल है! बाबा कहता है बच्चे तुम बेफिकर रहो। फिर फिकर देता रहता है कि बच्चे दो महीने में जो पुरुषार्थ करना है, कर लो। कल क्या होगा, वह सोचना नहीं है, अब करना है। बाबा को याद नहीं करना है लेकिन बाबा की याद नेचुरल हमारी लाइफ में रहे, जो आपको देखे उसको बाबा याद आ जाये।

तो बाबा को हमें याद करना नहीं है, नेचुरल बाबा की याद आती है। मुझे अमृतवेले सीन बड़ी अच्छी लगती है। बाबा की यह कितनी कमाल है जो सबको खींचकर अपने मधुबन में ले आता है। यह मधुबन बापदादा का घर सो बच्चों का घर है। बच्चे कहाँ जायेंगे! बाप के घर में रहेंगे ना। हम अपने बाप का खाती हूँ, मेरा बाप कौन है, कैसा है, क्या करता है... नशा चढ़ा हुआ है। बाबा हमारा है, हम अपने बाप का खाते हैं। कोई बाप यह नहीं कह सकता कि मैं अपने बच्चों को खिलाता हूँ। इतना विदेही रहना और ट्रस्टी रहना, यह गिफ्ट बाबा ने प्रवृत्ति वालों को दी है। जो विदेही रहने की प्रैक्टिस करते हैं, वह कार्य व्यवहार में ट्रस्टी रहते हैं। बाबा को फॉलो करना हो तो विदेही और ट्रस्टी रहो। ज्यादा मेहनत नहीं है। कोई फिकर की बात नहीं है। मेरा कुछ नहीं, बाबा ने फ्री कर दिया, सिम्पुल बातें हैं। ऐसी सिम्पुल बातें धारण करके सैम्पुल बनना चाहिए। बात को सिम्पुल कर दें, ऐसे बच्चे टाइम नहीं गंवाओ। हर बात को

सिम्पल और रॉयल, सच्चा एक्यूरेट बनाने वाले सैम्पुल बनो।

जो सच्चा है वह नाचता है। वह कहता नहीं मैं सच्चा हूँ। जो सच्चा बनता है वह वारिस है। वह कहता है सब बाबा का, बाबा मेरा है। न कोई चिंता है, न ममता है। ममता है तो चिंता भी जरूर होगी इसलिए बाबा कहते हैं माया क्या है? सतयुग में माया क्यों नहीं होगी? वहाँ प्रकृति हमारी सेवा में हाज़िर है, प्रकृति सतोगुणी है। अभी हम क्या कर रहे हैं?

परमात्मा एक है, ब्रह्मा बाबा भी एक ही है। बाबा के तन में शिवबाबा आकर वह कौन है, कैसा है, वह जानने देखने के लिए दिव्य बुद्धि, दिव्य दृष्टि दिया। परमात्मा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा दिव्य दृष्टि, दिव्य बुद्धि दी जिससे बाबा को जाना, पाया। जैसे बाबा ने हमको अपना बनाकर मुस्कराना सिखा दिया, ऐसे सब बाबा के बच्चे मुस्कराना सीख गये हैं। कोई बात मुश्किल नहीं, कुछ नहीं। ब्राह्मण के मुख से यह निकल नहीं सकता। जो बी.के. हैं, उनके मुख से कभी मुश्किल शब्द नहीं निकलना चाहिए। बात कुछ नहीं है, तुम्हारी शक्ल मुश्किल बनाती है। तुम ज्ञान तो सुनाते हो लेकिन तुम्हारी शक्ल वैकुण्ठ में चलने जैसी है!

यह कान तुम्हारे आर्गन्स हैं, इनके द्वारा तुम सुन सकते हो ना। अन्दर के कान खुले हैं। बाबा के महावाक्य जो कानों द्वारा सुने हैं, आँखों से देखे हैं, मुख से बोले हैं। बाबा के बोल सुनकर बुद्धि इतनी अच्छी हो जो धारणा करके सुना लो। बाबा पहले खुशी देता फिर शक्ति देता है। अनुभव है ना? बाबा खुश होता है तो वह शक्ति अलग है। ऐसी शक्ति खींचने वाले थोड़े हैं। वह जो सेवा कर रहे हैं श्रीमत से, हर एक अपने से पूछे कि मैं श्रीमत पर चलने वाली आत्मा हूँ? या मनमत पर, जो मुझे अच्छा लगता है उस पर चलती हूँ? जो मुझे समझ में आता है वही मुझे करना है। श्रेष्ठ पद पाना हो, आज्ञाकारी, वफादार बनना हो तो श्रीमत सिरमाथे पर रखना होगा। फिर सब काम बाबा आपेही करता है। वह कहता है मनमत नहीं चलाओ, तुम चिंता मत करो मैं बैठा हूँ। बाबा बैठा है हम क्यों चिंता करें! बाबा आपेही करता है ना, उसे कहते क्यों हो! अच्छा।

3) बाबा सर्वशक्तिवान है, उसे अपना आधार बना लो तो कोई व्यक्ति वैभव को आधार नहीं बनाना पड़ेगा

बाबा हम बच्चों के सामने हाज़िर होकर अपनी याद दिलाता है। बाबा कहता मैं बच्चों के सामने हाजिर हूँ तुम मुझे अच्छी तरह से देख लो। दृष्टि देना बाबा का काम है, लेना अपना काम है। बिगर मांगे बाबा मोती दे रहा है।

बाबा हमारे से क्या चाहता है, क्या उम्मीदें रखी हैं! बाबा को एक एक बच्चे का ख्याल है। बाबा ने प्रकृति को साथ देने के लिए आर्डर दिया है। हम कोई व्यक्ति या वैभव के अधीन नहीं हैं। थोड़ा भी कोई व्यक्ति का सहारा, उसकी विशेषता या गुण का थोड़ा भी आधार ले लिया, तो यह भी लगाव है। जिसके जिगर से बाबा बाबा निकलता, बाबा खिला रहा है, बाबा चला रहा है। मुख से बाबा न भी कहें प्रैक्टिकल है ना। चलाने वाला, उठाने वाला, खिलाने वाला सब बाबा ही है ना। बाबा सब कुछ करता है। तो किसी देहधारी से लगाव न हो। ऐसे थी नहीं थोड़ा स्नेह है... यह भी बाबा को मंजूर नहीं है।

बाबा कहता मैं भले एक हूँ पर सर्वशक्तिवान हूँ। जो मैं एक कर सकता हूँ वह सारे कल्प में कोई नहीं कर सकता। एक बाबा ने जो किया है उससे स्वर्ग की राजाई मिल गई है। अभी भी हम राज़े हैं। राजाई का जो सुख है, राजाई जो मिलने वाली है उसका सुख संस्कारों में चला गया है। वहाँ तो हम किसको बतायेंगे नहीं, अभी तो बताने के बिगर रह नहीं सकते हैं। सतयुगी राजाई हमको मिल रही है, वह देख लो ना। राजयोगी माना अभी मन कर्मेन्द्रियां सब आर्डर में हैं। श्रीमत सिरमाथे पर है। बाबा का सिर पर हाथ है, फिर हाथ में भी हाथ है। फिर पीठ पर भी हाथ है क्योंकि बाबा ही तो हमारा बैकबोन है ना।

बाबा से मैंने कभी कुछ मांगा नहीं है, अपने आप सब देता है। मांगने की कहने की बात नहीं है। शान्ति प्रेम से कहता है, बच्चे कभी मुरझाओ नहीं, मूंझो नहीं। सदा मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, शुक्रिया बाबा। बाबा कितना मीठा है, इतनी अच्छी सुन्दर सभा को देख बाबा भी बच्चों को

कितना प्यार कर रहा है। तो देखो कि हम बाबा को ज्यादा प्यार करते हैं या बाबा हमको ज्यादा प्यार करता है।

4) ''विघ्नों को देखकर घबराओ नहीं, यज्ञ रक्षक और विघ्न-विनाशक बनकर रहो''

एक है लेट-गो करना, दूसरा जरुरी नहीं है तो अवाइड करना ताकि मेरी याद अच्छे से अच्छी हो क्योंकि सारे चक्र के लिये अभी संगमयुग में मुझे याद करना है। व्यर्थ आवे ही नहीं जो समाप्त करना पड़े। मेरे पास व्यर्थ को आने की ताकत ही न हो। जो समर्थ स्मृति है जहाँ दृढ़ता है वहाँ व्यर्थ की दाल नहीं गलेगी, इसके बीच में व्यर्थ इन्ट्री नहीं कर सकता है, यह पर्सनल पुरुषार्थ की बात है। और यह देखा गया है कि माइन्ड का बॉडी पर फौरन असर होता है। जैसे लाइफ में भोजन-पानी, रेस्ट शरीर के लिये जरुरी है ऐसे माइण्ड के लिये क्या जरुरी है? जहाँ बिठाओ, जैसे चलाओ, जो खिलाओ तो हेल्दी वेल्दी हैपी है - यह सारा लाइफ का अनुभव है, इसमें सोचने की कोई बात ही नहीं है। परन्तु परमात्मा से आत्मा को पर्सनल जो पालना मिली है इसमें नम्बरवन प्यूरिटी है, वो 100 प्रतिशत मुझ आत्मा के अन्दर मन कर्मेन्द्रियों सहित प्युरिटी काम कर रही है? सभी एक एक व्यक्तिगत रूप से देखो अपने आप में और चेंज करो क्योंकि बाबा ने हमारे ऊपर बहुत-बहुत मेहरबानी की है, उसका शुक्रिया मानने में हमारे पास शब्द नहीं हैं, जो हर आत्मा को अपना बनाए स्वतंत्र बना दिया है कि जो पुरुषार्थ करना हो वो करो।

पुरुषार्थ में कोई साथ नहीं देगा, प्रभाव में आवे या झुकाव में आये तो पुरुषार्थ में विघ्न है। तो मेरी याद की शक्ति पर्सनल और संगठन के प्रति कितना काम करती है? वो देखो। पर्सनल याद मेरे लिये क्या काम करती है, मैं याद से कितना फायदा ले रहा हूँ और याद का जो फायदा है वो ईश्वरीय परिवार को कितना मिल रहा है? यह भी जानना चाहिए। दिन प्रतिदिन अवस्था परिपक्व हुई है तब तो आज इतना बड़ा संगठन बड़ा हो गया है। वैसे याद में अकेले हैं लेकिन परिवार में अकेले नहीं हैं तो उनको क्या अनुभव हो रहा है, वो देखना होता है। बाप को सर्व आत्माओं के लिये बहुत प्यार है, संगमयुग टोटल 100 साल का है। अभी 75 साल तो हो गया, बाकी करके थोड़ा 25 साल होगा, सतयुग आने में कलियुग जाने में चलो समझो इतना ही सही। उसमें परमात्मा मेरा बाप, फिर है प्रजापिता ब्रह्मा। अभी वो सभी को कैसे समझायें, उसके लिए हमारा चेहरा चलन, स्मृति, वृत्ति, दृष्टि यह सब बेहद में हो। जो बाबा ने पढ़ाया, जो पालना दी जो प्राप्ति हुई.. उससे यह सब बाबा की ही रचना है। अभी आपको भी अनुभव के आधार से, स्वयं की याद से हरेक अपने दिल से पूछे, मेरा अन्दर रिकॉर्ड कैसा है? भावना कैसी है? क्या है कि सेवा में कभी अपने लिये भी भूल जाते हैं। यह एक मुझे तरस पड़ता है सेवा से बहुत प्यार है, औरों को अनुभव होता है पर खुद को व्यक्तिगत मुझ आत्मा के लिये जो चाहिए, सेवा में वो भूल जाता है।

बाबा ने यज्ञ रचा है, शिवबाबा का भण्डारा है, ब्रह्मा मुख द्वारा सुनाया है, ब्राह्मणों के मुख में खिलाया है, तो यह यज्ञ हमारा है। हम यज्ञ रक्षक बनकर रहें। दूसरा विघ्न-विनाशक रहूँ, ऐसी स्थिति हो जो विघ्नों को देख घबराने की बात नहीं है, पर विश्व में कहाँ पर भी विघ्न न आवे। अन्तिम जन्म है इसमें अन्तिम घड़ी की स्थिति ऐसी हो, शरीर का कुछ भी है वो तो यहाँ है, मैं बाबा के पास वहाँ हूँ। बाप की दुआओं से और अपने पुरुषार्थ से चलते चलो। बाकी 5 परसेन्ट दवाई है, 50 परसेन्ट बाबा की दुआयें हैं 45 परसेन्ट अपना पुरुषार्थ है। बाबा दुआ भी कैसे देगा? सबको मंजूर है यह? माइन्ड बॉडी की बात चल रही है। माइन्ड को देख फिर बॉडी को देखो तो सोल कॉन्सेस हो जाते हैं। पर पहले बॉडी को देखते हैं तो सोल कॉन्सेस नहीं हो सकते हैं। कुछ भी होता रहे पर परिवार का प्रेम क्या होता है, उसमें रूखे नहीं बनो, टेन्शन वाले नहीं बनो। ऐसी स्थिति हो जो परिवार वाले जिस घड़ी मिले तो एक दो से ऐसी फीलिंग आनी चाहिए। पहले कारोबार थोड़ी होती थी, आज ज्यादा है तो आपसी मिलन में इतना रूहानियत की बात देखने में नहीं आती है। सहज मिले सो दूध बराबर, अपने आप हो रहा है ना। तो कभी बैठके बाबा से स्नेह लेने में, परिवार को स्नेह देने में गहराई में जाओ। अभी याद में रहने के आदती बनना है, न भाव, न स्वभाव, न संस्कार यह सब समाप्त करके जो बाबा ने कहा वो करके दिखाना है।

खुशनुमा चेहरे द्वारा सेवा करो, चेहरे से ऐसी शान्ति और सुख की लहर हो जो सब तरफ पहुंचे

- गुल्जार दादी

सभी बाबा की याद में लवलीन होके बैठे हैं और बाबा भी हरेक लवलीन बच्चे को देख कितना खुश हो रहा है, देख रहे हो बाबा कितना खुश हो रहा है! आप भी खुश हो रहे हैं और बाबा भी खुश हो रहा है। बाबा जो कहता है, जो चाहता है वही हमको करके दिखाना है। अभी समय दिन प्रतिदिन नाज़ुक तो आना ही है, वायुमण्डल के अनुसार इतना समय किसको नहीं मिलेगा तो ऐसे समय पर अपने खुशनुमा: चेहरे द्वारा सेवा करनी है। खुशनुमा: चेहरे को देख करके जो भी दिल में दु:ख होगा, वो उनको कुछ-न-कुछ सहायता मिलेगी क्योंकि बाबा कहता है समय ऐसा नहीं मिलेगा जो आप उनको कोर्स आदि कराओ लेकिन समय अनुसार तुम्हारा चेहरा सेवा करे। चेहरे में ऐसी खुशबू हो, ऐसी शान्ति हो, ऐसे सुख की लहर हो जो आपकी लहर उन तक पहुँचे और वो भी सुखमय खुशनुमा: हो जाए। दुनिया में खुशी के लिए क्या क्या करते हैं लेकिन यहाँ सिर्फ मेरा बाबा कहा खुशी आ गयी, मीठा बाबा कहा खुशी हो गयी, प्यारा बाबा कहा खुश हो गये। तो बाबा का बनना माना सदा खुश रहना।

तो बाबा चाहता है कोई बात भी आवे तो भी हमारा चेहरा खुशनुमा: होना चाहिए। चेहरे में फर्क नहीं होना चाहिए, क्योंकि हमारे अन्दर बाबा ने खुशी का भण्डार भर दिया है। तो यह चेक करो अमृतवेले से लेके खुशनुमा: रहते हैं? खुशी तो गायब नहीं होती? और खुशनुमा को देख करके ऑटोमेटिकली खुशी देख करके अपने में भी फील करता है कि मैं भी ऐसा बनूं, इसीलिए बाबा कहते हैं खुशी को कभी जाने नहीं दो क्योंकि खुशी की एक करामत है जो और चीज़ों में नहीं है। खुशी जितनी देंगे उतनी बढ़ेगी इसलिए बाबा कहते सदा अपने चेहरे पर खुशी हो, बातें तो होंगी कलियुग है और बाबा तो कहते हैं आपका तो माया से बहुत प्यार है ना, तो वो खिटखिट तो करती है थोड़ा बहुत, लेकिन आपकी खुशी नहीं जाये। आपका चेहरा हमेशा खुशमिजाज़ रहे। तो नोट करते हो अमृतवेले से हमारा चेहरा खुशनुमा: रहता है? अगर नहीं भी रहता है, उसको उसी समय ठीक करो क्योंकि आने वाले समय में आपका यह खुशनुमा: चेहरा ही सर्विस करेगा। तो अभी से जिस विधि से बाबा चाहता है सर्विस करना, वैसे हम सर्विस कर सकेंगे। सबसे प्यारे सर्विसएबुल बच्चे ही लगते हैं तो हम सभी ऐसे सर्विसएबुल बनेंगे ना! बातें तो आयेंगी क्योंकि अभी पास का सर्टीफिकेट का तो नहीं लिया है ना। पास होने वाले हैं, उसी खुशी में हैं, होना तो है ना सभी को पास, तो बाबा के पास रहेंगे, पास होंगे और औरों को भी पास करायेंगे।

बाबा हरेक का चेहरा चेक करता है सारे दिन में कितना समय खुशनुमा: रहा और कितना समय और बातों में लगा या कितना समय उलझन में रहा? और बाबा कभी भी मिलता है तो खुशनुमा: चेहरे से मिलता है ना, जैसा बाप वैसे हम बच्चे। फॉलो करने वाले हैं। अगर सदा खुशनुमा: रहने का संस्कार नहीं होगा तो हम सेवा क्या करेंगे? बाबा के साथ सेवाधारी हम भी हैं, बाबा भी है, साथ चल रहे हैं और बाबा के साथ ही पहुचेंगे वतन में। तो सभी ठीक हैं? कितना पर्सेन्ट? जो समझते हैं 100 परसेन्ट के आस-पास खुश यानि सदा प्रसन्न रहते हैं वो हाथ उठाओ। बाबा जब भी देखे, मेरा बच्चा .. देख करके कहे वाह! खुशनुमा: खुशी में रहता है, बाबा कितना खुश होगा! और देखेगा यह तो उलझन में बैठा है तो सोचेगा ना, क्या हुआ बच्चे को। तो खुशी हमारे साथ रहे, हो सकता है ना! और है क्या हमारे पास खुशी के सिवाए। दु:ख हमारे पास आ सकता है? अशान्ति आ सकती है? नहीं। क्योंकि बाबा हमारे साथ है। सभी ने बाबा को दिल में अच्छी तरह से बिठाया है ना, तो बाबा अन्दर बैठा हुआ है और खुशी नहीं होगी तो क्या कहेंगे? इसीलिए सदा खुश। तो सब खुशी से मालामाल बनके जाना, बाबा की खुशी बाबा की शक्तियाँ लेके जाना। ठीक है ना! सभी भरपुर होके जायेंगे या जैसे आये वैसे ही जायेंगे! जो भरपूर हो गये हैं वो हाथ उठाओ, वाह! हाथ तो बहुत जल्दी उठाया। अब इस हाथ को याद रखना। अभी याद में बैठो। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''अब क्यों क्या के प्रश्नों को समाप्त कर संगठित रूप में अचल बनो और बनाओ''

1) इन्टरनेशनल वर्ल्ड पीस डे पर हर एक के अन्दर यही शुभ संकल्प रहता कि हम सब ब्राह्मणों का यह वर्ल्ड पीस डे है, यह भी एक बहुत बड़ी अनायास ही ड्रामा अनुसार जो विधि फिक्स हुई है, इसका भी देश-विदेश में अच्छा ही प्रभाव है। यह भी अच्छा साधन है। विदेशों में इस दिन को बहुत महत्व देते हैं। आज के दिन क्लासेज के भी संगठित रूप में प्रोग्राम चलते, सभी का मिलन भी होता। यह समय करीब-करीब सभी को अनुकूल भी होता है। हम सभी का यही शुभ संकल्प हैं कि हमें विश्व में अपने साइलेन्स के वायब्रेशन चारों तरफ फैलाने है। तो सभी के अन्दर सवेरे से यह संकल्प रहता कि आज हम सारे विश्व में शान्ति की किरणें फैलायें।

2) हम जितना संगठित रूप में मिलकर हर एक कार्य करते हैं उतना पावरफुल वायब्रेशन बनता है। तो हम सब एक साथ मिलकर ऐसा कंगन बांधें जो पीस के साथ-साथ लव और युनिटी का भी वायब्रेशन सबको मिले। जितना हम सभी स्वयं को अन्तर्मुखी बनायेंगे, जितना हम एक दो के प्रति शुभ भावना रखेंगे उतना ही हम एक दो के सहयोगी, साथी रहेंगे। कोई भी कार्य व्यवहार में हम सबका साथ है। अब क्यों, क्या के संकल्पों को समाप्त कर स्वयं, स्वयं को अचल बनाओ।

3) बाबा ने हम बच्चों को ऐसी समझ दी है जो हमें भटकने से छुड़ाती जाती है। मनुष्यों को भक्ति भी बहुत भटकाती है, तो विकार भी भटकाते हैं। विकारों के वशीभूत आत्मा विकारों से छुटकारा पाये - यह बड़ा मुश्किल है। विकारों की कमजोरी परमात्मा बाप का बनने नहीं देती। कमजोरी सत्यानाश कर देती है। विकारों पर विजय पाने के लिए गुप्त योगी बनना पड़े। शो करने वाला नहीं। शो करने वाला कभी भी भागन्ती हो सकता है। ऊपर से कहेंगे बाबा-बाबा लेकिन अन्दर से जो सच्चा प्यार चाहिए, वह नहीं। बाबा के साथ भी बाबा को झूठा प्यार दिखायेंगे। अन्दर होगी ठगी, चोरी.. दूसरे किसी को प्यार करते होंगे जरूर। कोई सम्बन्धियों को प्यार करते होंगे, कोई धन दौलत से करते होंगे.. फिर पार्ट बाबा के साथ ऐसा बजायेंगे, बाबा यह सब तो आपका है। परन्तु एक भी चीज़ को हाथ लगाने नहीं देंगे। अगर तन-मन-धन सब तेरा कहा तो तेरा माना सदा उसकी सेवा में हाज़िर। मन तेरा माना कहाँ भी भटक नहीं सकता। एक बाबा दूसरा न कोई। धन तेरा है माना मेरे पास धन नहीं, जो खिलाओ, जहाँ बिठाओ।

4) हम बाबा के बच्चे बेफिकर बादशाह हैं। फकीर नहीं हैं लेकिन मस्त फकीर हैं। जहाँ पांव रखें वहाँ बाबा की सेवा। नहीं तो हमको जरूरत नहीं है धरती पर पांव रखने की। अब हमारी अवस्था ऐसी हो - धरती पर पांव हैं तो सेवा अर्थ हैं, नहीं तो ऊपर भी हमारे लिए बहुत सर्विस है। चारों ओर सर्विस है। अगर बाबा सेकण्ड में आ जा सकता है तो हम भी तो बाबा के बच्चे सेकण्ड में आ जा सकते हैं। बाबा पतित तन में आया लेकिन भूमि ऐसी पावन बनाई जहाँ आत्मायें आकर पावन बनें। सेन्टर्स फायर ब्रिग्रेड हैं, जहाँ आग लगे बचाने के लिए, दुनिया के हर कोने में फायर ब्रिगेड हैं। लेकिन बचकर कहाँ आयेंगे? बाबा का घर देख लिया है। विनाश के समय स्थूल में नहीं पहुँचेंगे तो बुद्धि से तो पहुँच ही जायेंगे। इतना हमारा अभ्यास हो, यहाँ आग लग रही है और हम ऊपर चले जाएं। सेकण्ड में अशरीरी बनने की प्रैक्टिस हो, इसकी रिहर्सल करो। हमारे अन्दर बाबा की इतनी याद हो जो कोई भी आत्मा को हमारा यह शरीर दिखाई न पड़े। इसके लिए गुप्त याद। गुप्त बाबा से अपनी लगन लगाते जाना यह है सच्चा पुरुषार्थ।